CORE SYNTAX- A MINIMALIST APPROACH

DAVID ADGER

(Chapter 1 parts)

HINDI TRANSLATION AND READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR EKLAVYA, BHOPAL & NMRC JNU, BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

NOVEMBER 2012

कोर सिनटैक्स -- अ मिनिमलिस्ट अप्रोच

डेविड एडजर

READING GUIDE

इस लेख में हम डेविड एडजर के कोर सिन्टेक्स किताब के पहले अध्याय के कुछ हिस्सों को पड़ेंगे ।

सबसे पहले एडजर भाषाई ज्ञान और दूसरे विषयों के ज्ञान के फर्क के बारे में बताते हैं । हमारे इतिहास का ज्ञान क्यों और कैसे हमारे भाषा के ज्ञान से अलग है ये हमे बताया जाता है ।

इसके बाद एडजर हमें बताते हैं भाषा का ज्ञान किस तरह से बहुत ही कम उम्र में बच्चों को अच्छी खासी तरह से हो जाता है । बच्चों पर किये गये प्रयोगो से किस तरह ये साबित किया गया है ये एडजर बताते हैं ।

एडजर ये सवाल उठाते हैं कि ये कैसे संभव है कि इतने कम stimulus होते हुये बच्चा इतना कुछ जान लेते है । इस मुद्दे को Poverty of Stimulus कहा गया है । इसी तरह का एक सवाल यूनान के प्लेटो ने 4 BC में उठाया था । इस सवाल को नोअम चोमस्की Plato's Problem कहते हैं ।

इसके बाद एडजर व्याकरण शब्द का विश्लेषण करते हैं । मनुष्य के भाषा के अन्तर्निहित ज्ञानव्याकरण चोमस्की द्वारा I-Language का नाम दिया गया है । एडजर इसी I-Language कि चर्चा करते हैं और इसके अलग-अलग पहलूओं के बारे में बताते हैं । जैसे कि दिमाग के कौन से हिस्से से I-Language का ताल्लुक है, इसमें genes का कितना योगदान है इत्यादि ।

इसके आगे की चर्चा में ये बताया गया है कि I-Language की सबसे खास विशेषता क्या है, ये विशेषता ये है कि इसके कारण मनुष्य अनगिनत वाक्य बना पाता है और अपने सोच को भाषा का रूप दे पाता है । इसी बात को आगे बड़ाते हुये एडजर ये दिखाते हैं कि किस तरह हम नियम/फार्मूला/सूत्र बना सकते है जिसमें हज़ारों वाक्य बनाने की क्षमता हो । एडजर ये बताते हैं कि कुछ इस तरह के ही नियम हमारे दिमाग में होते होंगे जिससे हमारी भाषा इतनी सृजनशील होती है ।

****

डेविड एडजर – कोर सिनटैक्स

अन्तर्निहित ज्ञान

भाषा का ज्ञान और विषयों के ज्ञान से अलग है । जैसे मान लीजिये इतिहास का ज्ञान । ये ज्ञान सिखाया हुआ है, इस ज्ञान को हम भूल सकते हैं, और हम इसके बारे में बात कर सकते हैं। जैसा कि कोई ये बता सकता है कि टीपू सुल्तान मैसूर में अंग्रेज़ो के साथ लड़े थे । पर हो सकता है कि आपको ये मालूम न हो कि उनका जन्म कब हुआ था या उनके मां का नाम क्या था । ये भी हो सकता है कि आपको ये कभी मालूम था कि टीपू सुल्तान की मौत कब हुई थी पर ये बात आपको अभी याद न हो । इसलिये आपके इतिहास का ज्ञान आधी–अधूरी, कुछ भूली हुई है । पर आपके भाषा का ज्ञान कभी इस तरह का नहीं हो सकता । आप अपनी भाषा में वाक्य बनाना कभी भूल नहीं सकते यदि न किसी कारणवश आपके दिमाग में चोट आए और आप वाक्य रक्य रचना भूल जाये पर इतिहास भूलने के लिये दिमाग पर चोट लगने की ज़रूरत नहीं पड़ती ।

भाषा के ज्ञान और दूसरे विषयों के ज्ञान के बीच सबसे ख़ास अन्तर ये है कि आप और विषयों के ज्ञान के बारे में सुस्पष्ट बात कर सकते हैं । आप बता सकते हैं कि भारत को 1947 में स्वाधीनता मिली थी पर ये नहीं बता सकते कि आप वाक्य रचना कैसे करते हैं । इसके बावजूद आपको अपनी भाषा के वाक्यों के बारे में गहरा ज्ञान है । आप ये जानते है कि ये

इस बच्चे को समझाना मुश्किल है

एक सही हिन्दी वाक्य है पर

इस बच्चे को समझा करवाना मुश्किल है

ये हिन्दी में ठीक नहीं लगता ।

ये आपके भाषा का अन्तर्निहित ज्ञान है जिससे आप ये जानते है कि ये वाक्य सही नहीं है ।

सबसे अहम बात ये है कि भाषा के ज्ञान का अर्जन दूसरे तरह के ज्ञान के अर्जन से अलग तरीके से होता है । तीन साल के होते–होते ज़्यादातर बच्चों को अपने भाषा के वाक्य संरचना का ज्ञान हो जाता है । ठसा देखा गया है कि बच्चे ठसे वाक्य रचना करने में भी सक्षम है जो उन्होने अपने आस–पास के बातचीत में नहीं सुने हो । अंग्रज़ी के हां–नहीं वाले प्रश्न को लेकर बच्चों के साथ एक प्रयोग किया गया । निम्नलिखित वाक्य अंग्रज़ी के हां–नहीं वाले प्रश्न है –

Has Jenny eaten the cake?
Will Anson come to the party?

ये प्रश्न इन वाक्यों से जुड़े हुये हैं –

Jenny has eaten the cake
Anson will come to the party

ंलग सकता है कि इन वाक्यों से प्रश्न में कोई कठिन नियम का इस्तेमाल नहीं करना पड़ता है पर असल में इससे तीन तरह के नियम बनाने की संभावना है ––

1. पहले दो शब्दों को एक दूसरे से बदल दे
2. पहले क्रिया शब्द के साथ पहले noun phrase को बदल दे
3. कर्ता के बाद आने वाले क्रिया शब्द को कर्ता के पहले ले आयें

अब हम हां–नहीं प्रश्न बनाने के लिये पहले नियम का प्रयोग करें और पहले दो शब्दों को एक दूसरे से बदल दे तो कुछ इस तरह के वाक्य मिलेंगे

The man has eaten the cake
*Man the has eaten the cake?

जैसा आप देख सकते हैं कि पहले नियम से हां–नहीं वाले प्रश्न नहीं बने । दूसरे नियम को लगाकर देखे तो हमें ठसे वाक्य मिलेंगे –

The woman who is singing is happy
*Is the woman who singing is happy?

पहले क्रिया शब्द को पहले noun phrase के साथ बदलने से जो प्रश्न बना वो गलत है । इसके बाद हम तीसरे और सबसे कठिन नियम को देखेंगे जो ये है कि कर्ता के बाद आने वाले क्रिया शब्द को कर्ता के पहले लगा दो । *The woman who is singing* कर्ता है इसके बाद क्रिया शब्द *is* है । तो तीसरे नियम से जो प्रश्न बना वो हुआ –

Is the woman who is singing happy?

और यही सही नियम है ।

1987 में क्रैन और नाकायामा द्वारा किये गये कई प्रयोगो में ये देखा गया कि बच्चे हमेशा तीसरे नियम का ही प्रयोग करते है । तीन साल दो महीने के उम्र के छोटे बच्चे भी प्रश्न हां–नहीं प्रश्न बनाने के लिये सही नियम का उपयोग करते हैं ।

क्योंकि बच्चे के भाषाई ज्ञान की तुलना में उनको मिलने वाला stimulus बहुत कम है इसलिये इसे Poverty of stimulus कहा गया है ।

अचरज की बात ये है कि इस उम्र में बच्चों के दूसरे तरह के ज्ञान का विकास ज़्यादा नहीं होता है पर भाषा के मामले में उनमें वयस्कों जितना ही विकास हो चुका होता है । इतने कम तत्व से इतने ज़्यादा ज्ञान का विकास कैसे होता होगा । ये बात यूनान के विद्वान प्लेटो ने 4 BC में उठाई थी । चॉमस्की ने इसे प्लेटो की समस्या (Plato's Problem) कहा है ।

अन्तर्निहित ज्ञान को व्याकरण के नाम से भी जानते हैं । व्याकरण शब्द को ठीक तरह से समझना ज़रूरी है । मनुष्य के अन्तर्निहित भाषाई ज्ञान को व्याकरण कहा जाता है और भाषा–वैज्ञानिको द्वारा मनुष्य के भाषा के ज्ञान का विश्लेषण कर सिद्धांत बनाना भी व्याकरण ही है । चॉमस्की मनुष्य के अन्तर्निहित व्याकरण को I–Language कहते है जहां I का मतलब individual (व्यक्ति विशेष) internal(अन्दरूनी) है । किसी भाषा के बोलने वाले का अपनी भाषा के अन्तर्निहित ज्ञान को I–Language कहेंगे और भाषा–वैज्ञानिक के पास इस I–Language की थियोरी (theory) होती है ।

हमारे दिमाग में दो हिस्से हैं जो ब्रोकाज़ एरिया (Broca's Area) और वरनिकेज़ एरिया (Wernicke's Area) के नाम से जाने जाते हैं । माना जाता है कि I–Language या भाषा के अन्तर्निहित ज्ञान का इन हिस्सों से ताल्लुक है । ये हम इसलिये जानते है क्योंकि ये देखा गया है कि इन हिस्सों में चोट पहुँचने से भाषा बोलने कि समस्यायें पैदा होती है । जैसे ब्रोकास एरिया में चोट लगने पर इंसान को कठिन वाक्य बोलने की समस्या होती है जबकी उसे शब्दों के उच्चारण करने में शायद कोई समस्या न हो ।

I–Language के कुछ पहलू वंशगत (genetic) लगते है । Specific Language Impairment (SLI) कुछ इस तरह के भाषाई समस्या है जो की दूसरे मानसिक या शाररिक विकास से जुड़े हुये न हो । SLÎB वाले बच्चों का बाकी विकास ठीक–ठाक होता है, उन्हें सुनने में कोई तकलीफ नहीं होती है पर फिर इनमें भाषा के विकास की समस्यायें होती हैं। शोधकार्यों में देखा गया है कि कुछ परिवारों में SLI की प्रवृत्ति रहती है । शोधकर्ता मिरना गोपनिक और उनके सहकर्मियों का मानना है कि परिवारों में SLI की प्रवृत्ति genetic कारणों द्वारा ही समझा जा सकता है । शोधकर्ताओं ने एक ठसा gene भी खोज निकाला है जिसमें तबदीली आने से (gene mutation) से लोगों में SLI होती है ।

I–Language के कुछ और पहलू परिवेश से प्रभावित होते हैं । एक बच्चा अपने परिवेश के भाषा या भाषाओं को सीखता है भले ही जन्मगत उसके मां–बाप की जो भी भाषा रही हो।

I–Language मनुष्य के मस्तिष्क का वो भाग है जिसके कारण हम अर्थ और रूप (ध्वनियां, शब्द) को जोड़ पाते हैं । I–Language बहुत ही सृजनशील है इसलिये हम अपार अर्थ और रूप को जोड़ पाते हैं । इसलिये ही मनुष्य जिस तरह भाषा का उपयोग कर सकता है वैसा कोई और प्राणी नहीं कर पाता । बिना I–Language के हमारे पास अपनी सोच को बोली में बदलने की क्षमता नहीं होती । आधुनिक भाषा–विज्ञान

का ध्येय मनुष्य के मस्तिष्क के इस तथ्य को समझना है, जिससे हम अपनी बाकी और संज्ञानात्मक क्षमताओं के बारे में भी जान सके ।

अब तक के मुद्दों के बिला पर हम ये दो बातें कह सकते हैं – पहला ये कि वाक्य एक अमूर्त मानसिक पदार्थ है और दूसरा ये कि कोई वाक्य हमारी भाषा का हिस्सा है या नहीं ये बात हमारे अन्दरूनी भाषाई ज्ञान का हिस्सा है ।

वाक्य

I-Language का एक गुण ये है कि इसमें असीमित वाक्य बनाने की क्षमता है । इसलिये मनुष्यों के लिये ये संभव है कि वे अपने विचार, अपने भावना इत्यादि इतने अलग-अलग तरीके से कर सकते हैं । क्या ये सारे वाक्य हमारे दिमाग में पहले से जमा है? एक वाक्य देखिये –

मुन्नी ने एक तितली देखी

अब इसमें और कुछ जोड़िये --

मुन्नी ने दो तितलियाँ देखी

मुन्नी ने तीन सौ तितलियाँ देखी

मुन्नी ने चार हज़ार दो सो तिरानवे तितलियाँ देखी

इस तरह से आप इस वाक्य को जितना चाहे उतना लंबा खींच सकते हैं । और एक उदाहरण देखिये --

राम ने सोचा कि सीता बेहोश हो गई

इस वाक्य को हम एक और वाक्य के अन्दर डाल सकते हैं जैसे –

तुमने बताया कि राम ने सोचा कि सीता बेहोश हो गई

इसको लेकर आप एक और वाक्य बना सकते हैं ––

निशा ने लिखा कि तुमने बताया कि राम ने सोचा कि सीता बेहोश हो गई

आप इस तरह वाक्य को बढ़ाते जा सकते है इसका कोई अन्त नहीं है । मतलब ये कि हम कितने वाक्य बना सकते हैं इसकी कोई सीमा नहीं है । भले ही हम इस तरह लंबे–लंबे वाक्य कभी न बोले पर ज़रूरी बात ये है कि हम बोल सकते हैं । हमारे लिये इस तरह के वाक्य बोलना संभव है इसका कारण हमारा I–Language है इस क्षमता को competence भी कहते हैं । असलियत में हम में क्या बोलते है इस बात को हमारा performance कहा जाता है ।

भाषा के प्रयोग के अध्ययन के लिये हम कहानियों, परिचर्चाओं से वाक्य समूह संग्रह कर सकते हैं । पर I–Language, यानी हमारी अन्दरूनी भाषाई क्षमता के अध्ययन के लिये ये ज़रूरी नहीं है । कहानियों या परिचर्चाओं से हमें हर तरह के वाक्य नहीं मिलते ठसे वाक्य जो सिद्धान्त तैयार करने के लिये ज़रूरी हो वो हो सकता है कि इस तरह के वाक्य समूह न मिले । इसके अलावा भाषाई क्षमता के अध्ययन के लिये ठसे दृष्टांतों को भी देखना पड़ता है जो व्याकरण सम्मत नहीं हो और ये हमें कहानियों, परिचर्चाओं इत्यादि से नहीं मिल पाते ।

हमारे I–Language की सृजनशीलता इस बात से बनती है कि वाक्य रचना एक संरचना निर्भर कार्य है । पहले दिये गये उदाहरण में हम एक वाक्य को दूसरे वाक्य से जोड़कर लंबा वाक्य बना रहे इसे हमतो कुछ इस तरह दिखा सकते हैं ।

अ) S –> सीता बेहोश हो गई
ब) S –> तुमने कहा कि S

(यहाँ S का मतलब sentence यानी वाक्य है, और ये नियम ये बताते है कि S को ठसे लिखे)

इस तरह के नियमों को Phrase Structure Rules कहा जाता है । ये एक फॉर्मूला की तरह है जिसका इस्तेमाल कर हम असीमित वाक्य तैयार कर सकते हैं । जैसे --

S ((अ) नियम लगायें)

सीता बेहोश हो गई

अब हम कुछ और वाक्य बना कर देखते हैं --

S ((ब) नियम लगायें)
तुमने कहा कि S ((ब) नियम लगायें)
तुमने कहा कि तुमने कहा कि S ((अ) नियम लगायें)
तुमने कहा कि तुमने कहा कि सीता बेहोश हो गई

आप देख सकते हैं कि (ब) नियम लगाने से हमें नया वाक्य मिलता है जिसमें हम फिर (ब) नियम लगा सकते हैं । इन दो नियमों से ही हम असीमित वाक्यों की रचना कर सकते हैं । अगर हमारे पास कुछ और ठसे नियम हो जिससे दूसरे तरह के वाक्य संरचना करते हो तो आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि किस तरह से थोड़े से नियमों से हज़ारों वाक्यों कि रचना हो सकती है ।

ऊपर दिये गये नियम भाषा में पुनरावर्तन को दर्शाती है । यह पुनरावर्तन की क्षमता भाषा के सृजनशील होने का एक कारण है । ये भाषा के गणितीय ढांचे का भी निदर्शन है ।

****